DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mobile- 9415371545

B.A PART-I (HON'S) Paper-II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Lecture-01 Date.03/07/20...

एम० एन० राय की मानववाद सम्बन्धी अवधारणा

मानववाद या मनुष्यवाद दर्शनशास्त्र में उस विचार धारा को कहते हैं जो मनुष्यों के मूल्यों और उनसे सम्बन्धित मुद्दों पर ध्यान देती है। अधिकांशतः मानववाद में धार्मिक दृष्टिकोणों और अलौकिक विचार पद्धतियों को हीन समझा जाता है और तर्कशक्ति, न्यायिक सिद्धान्तों और आचार-नीति पर जोर होता है।

मानववाद नानाविध रूपों में विश्व की सभी प्रमुख सभ्यताओं में पाया गया है। प्राचीन यूनान, चीन और अन्य संस्कृतियों में भी मानववादी मिलते हैं। मानववाद सम्बन्धी अवधारणा का प्रारंभिक रूप से उस विचारधारा से सम्बन्ध है जिसकी दृष्टि व्यक्ति का स्वायत्तता पर केन्द्रित है। मानववाद शब्द प्रथम बार संभवतः फ्रांसीसी विचारक मोंटेन के लेखन में आया है। जहाँ पर उसने अपने चिन्तन को धर्मशास्त्रियों के चिन्तन के विपरीत प्रस्तुत किया है। मानववादी विचारक मानव की क्षमता में विश्वास रखते हैं तथा उनका कहना है कि मानव में बहुत सामर्थ्य है। और यदि उसे विकास का अवसर मिले और उसका पूर्ण विकास हो जाय तो मानव बहुत ऊँचा उठ सकता है। मानववादियों का मानव की अच्छी प्रकृति में विश्वास है। बी.आर. आम्बेडकर, महात्मा गांधी, बर्टेण्ड रसल और टॉलस्टॉय बीसवीं सदी के महान मानववादी थे। अपने आरंभिक स्वरूप में कार्ल मार्क्स भी मानववादी था। एम० एन० राय भी प्रमुख मानववादी हैं। उनकी वैचारिक यात्रा लम्बी है। उन्होंने अपनी यात्रा मार्क्सवाद से आरंभ की और उग्र मानववाद पर समाप्त की।

मानववादी चिन्तन में मनुष्य अपने नीजि जीवन में स्वतंत्र होता है। वह न केवल अद्वितीय है अपितु भिन्न भी है। जो कभी दूसरा नहीं हो सकता। नैतिक जीवन के नियम-निर्धारण के लिए उसने अन्तर्निहित प्राकृतिक अधिकार भी प्राप्त किए। आगे चलकर बाद में इसके साथ कई अन्य पक्ष भी जुड़े। जब मानव ने सार्वजनिक क्षेत्र में स्वतंत्रता का दावा किया और राजनीतिक शासन चुनने के अपने अधिकार पर बल दिया। इस प्रकार लोकतंत्र सरकार का एकमात्र वैध बन गया। यह आन्दोलन 18वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों के समय इसे चरमोत्कर्ष पर था।

PTO

Scanned with CamScanner

Ref. No..... Date.13/07/20.....

दोनों क्रांतियाँ मानववादी अवधारणा से प्रेरित थीं। मानववादी विचारकों का मानना है कि कोई भी शक्ति या सत्ता भले ही वह परम्परा, परिवार अथवा राज्य हो, मनुष्य की इच्छा से श्रेष्ठकर नहीं हो सकती।

एम० एन० राय ने अपने नवीन मानववादी दर्शन में मानव को स्वयं अपना केंद्र बतलाकर मानव की स्वतंत्रता एवं उसके व्यक्तित्व का प्रबल समर्थन किया है। वस्तुतः २०वीं सदी में फ्रांसीवादी और नाजीवादी तथा साम्यवादी राजव्यवस्थाओं ने व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं व्यक्तित्व का दमन किया। और उदारवादी लोकतंत्र में मानव कल्याण के नाम पर निरन्तर बढ़ती केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति से सावधान किया। एम० एन० राय ने व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं व्यक्तित्व की गरिमा के पक्ष में जो उग्रवादी विचार दिए हैं उनकी आधुनिक युग के लिए विशिष्ट देन है।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner